दो शब्द

लगभग 30–35 साल पहले जब अमेरिकन लोग किसी पगड़ी वाले को देखते थे, तो पूछते थे, "तू मुसलमान है ?" "नहीं, मैं मुसलमान नहीं।" सवाल, "क्या तू हिन्दू है ?" जवाब, "नहीं, मैं हिन्दू भी नहीं।" सवाल, "फिर तू कौन है ?" जवाब, "मैं सिख हूँ।" यह सुनकर वे हैरानी के साथ कहते थे, "वो क्या है ?" यानी सिख क्या होता है ? इसका जवाब देने के लिए कुछ सज्जनों ने मिलकर 1980 में अमेरिका की मिशीगन स्टेट में एक सोसायटी रजिस्टर्ड करवाई जिसका नाम 'सिख मिशनरी सैंटर' रखा गया। इस सोसायटी का मूल मंतव्य सिख धर्म की बाबत सारी दुनिया को जानकारी उपलब्ध कराने का था। इस कार्य के लिए कई यत्न किए गये, पर अन्त में 1990 में "SIKH RELIGION" (सिख धर्म) नाम की अंग्रेजी में एक पुस्तक छापी गयी। यह पुस्तक सिख इतिहास और सिक्खी के मूल सिद्धान्तों का वर्णन करती है।

सारी दुनिया में सिख धर्म की जानकारी का प्रचार करवाने के लिए यह पुस्तक अब तक 4,500 से अधिक लाइब्रेरियों को भेजी गयी है और अन्य पुस्तकालयों को भेजी जा रही है। दो हज़ार से अधिक अमेरिका और कनेडा के प्रोफेसरों को भेजी गयी है। ये प्रोफेसर यूनिवर्सिटी और कालेजों में दुनिया के धर्मों के बारे में पढ़ाते हैं। इन्होंने पहले कभी सिख धर्म के बारे में नहीं सुना था, पर अब ये प्रोफेसर सिख धर्म के बारे में भी बोलते हैं। इस तरह, यह पुस्तक दुनिया के छोटे से छोटे और बड़े से बड़े प्रत्येक देश की पुस्तकालय में भेजी गयी है।

यह किताब इंटरनेट पर भी उपलब्ध है www.sikhreligion.org अगर SIKH RELIGION को खोजें तो याहू, गूगल, ऐल्टाविस्टा, एओएल आदि सभी इंटरनेट इंजनों पर मिल जायेगी।

रूसी भाषा में छपकर यह किताब रूस और इसके निकटवर्ती रूसी भाषा बोलने वाले देशों में लगभग पाँच से दस हज़ार तक बांटी गयी है।

दक्षिणी अमेरिका की दो यूनिवर्सियों की लाइब्रेरियों ने लिखा कि उनकी भाषा स्पेनिश है, अगर इस किताब को स्पेनिश भाषा में छापकर भेजें तो अधिक अच्छा होगा। इसलिए यह किताब अब स्पेनिश भाषा में छपकर स्पेनिश बोलने वाले हर मुल्क की प्रत्येक लाइब्रेरी में पहुँच चुकी है।

अब यह फ्रांस और जर्मन की भाषा में तैयार हो रही है। उम्मीद है कि फ्रांसिसी ज़बान में छपकर जल्द ही फ्रांस की हर लाइब्रेरी में चली जायेगी। जर्मनी भाषा में छपकर लगभग दो हज़ार से अधिक जर्मन लाइब्रेरियों में अगले साल के आखिर तक पहुँच जायेगी।

एक सिख युवक ने अंग्रेजी में छपी 'SIKH RELIGION' पुस्तक को पढ़ा। पढ़ने के बाद उसने अनुभव किया कि इस पुस्तक को अधिक से अधिक पाठकों तक पहुँचना चाहिए और इसलिए उसने अपने खर्चे पर इसका पंजाबी भाषा में अनुवाद किया। यह पुस्तक अब पंजाबी में छप गई है और सिख–संगत में मुफ्त वितरित की जा रही है।

जब इस पुस्तक का पंजाबी संस्करण नई दिल्ली में वितरित हुआ, लोगों ने इसके हिन्दी अनुवाद की भी मांग की। सो, हिंदी के चर्चित लेखक एवं अनुवादक श्री सुभाष नीरव (248, टाइप–3, सेक्टर–3, सादिक नगर, नई दिल्ली–49) को इसके हिन्दी अनुवाद का कार्य सौंपा गया। श्री नीरव ने बड़े परिश्रम और मन से, सहज और सरल भाषा का प्रयोग करते हुए इस पुस्तक का हिन्दी में उत्तम अनुवाद किया है। इस कार्य के लिए सिख मिशनरी सैंटर इनके इस अद्वितीय कार्य के लिए बहुत आभारी है।

सिख इतिहास में पहली बार इतनी बड़ी पुस्तक सिख धर्म के प्रचार के लिए सारी दुनिया के कोने–कोने में भेजी गयी है। हिन्दुस्तान से बाहर पाँच भाषाओं (अंग्रेजी, रूसी, स्पेनिश, फ्रेंच और जर्मन) में छपकर उन देशों की लाइब्रेरियों में हज़ारों की गिनती में पहुँची है ताकि बाकी संसार भी गुरु जी के इलाही सन्देश से लाभ उठा सके।

आशा है कि जो भी व्यक्ति इस किताब को ध्यानपूर्वक पढ़ेगा, वह सिख धर्म की अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त कर सकेगा।

अक्टूबर, 2005

भूमिका

सिख धर्म गुरु नानक देव जी द्वारा भारत में दस जामों में (सन् 1469–1708) स्थापित किया गया। दसवें पातशाह गुरु गोबिंद सिंह जी ने व्यक्तिगत गुरु की प्रथा बन्द करके गुरु ग्रंथ साहिब जी के अन्तिम और शाश्वत गुरु होने की घोषणा की।

गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी गुरु साहिबान ने स्वयं लिखी और संकलित की, इसलिए यह असली और प्रामाणिक है। इसमें 1430 पृष्ठ हैं जिसमें किसी को मात्रा तक में परिवर्तन करने की आज्ञा नहीं है।

गुरु ग्रंथ साहिब, गुरु साहिबान की जीवन कथा नहीं, बल्कि यह सारा का सारा सर्व–शक्तिमान अकाल पुरुख की महिमा को अर्पित किया हुआ ग्रंथ है। सिख धर्म इससे पहले स्थापित हुए धर्मों का मिश्रण या प्रतिरूप नहीं है। यह एक पूर्णतौर पर नया ही दैवी सन्देश है। गुरु साहिबान ने इस संसार को जो आदेश दिए, वे सब उन्हें सीधे अकाल पुरुख से मिले थे, जिसकी पुष्टि गुरु साहिबान ने स्वयं की है–

"इहु अखरु तिनि आखिया जिनि जगतु सभु उपाया।"

(श्लोक महल्ला 4, पृष्ठ 306)

सिख धर्म, मुक्ति प्राप्त करने के लिए सभी परम्पराओं, रीतियों, रस्मों को अस्वीकार करता है। यह योग, शारीरिक तपस्या, स्वयं को कष्ट देने के साथ–साथ सन्यास और त्याग आदि को भी नकारता है। सिख धर्म देवी–देवताओं, पत्थरों, बुतों, मूर्तियों, तस्वीरों, कब्रों, मसानों की पूजा को नहीं मानता। केवल एक निराकार, अकाल पुरुख की स्तुति करने के बारे में ही बताता है।

गुरु साहिबान ने सिख धर्म बिलकुल एक ईश्वरवाद के तौर पर प्रचारित किया। यह एकमात्र सर्वोच्च अस्तित्व अकाल पुरुख के अलावा किसी दूसरे को नहीं मानता।

सिख धर्म का आध्यात्मिक प्रस्ताव यह है कि प्रत्येक मनुष्य के जीवन में, चाहे वह अमीर हो या गरीब, उच्च हो या निम्न, जाति, मत, रंग–नस्ल, लिंग, धर्म या सम्प्रदाय के भाव के बग़ैर, एक ही दैवी प्रकाश बसा हुआ है। इसलिए सिख मंदिर अर्थात गुरद्वारे (गुरु घर), इस संसार में सबके लिए, बिना किसी पक्षपात या सामाजिक भेदभाव से खुले हैं। संसार में हरेक व्यक्ति को गुरद्वारे में आने और पूजा–पाठ में हिस्सा लेने का बराबर का अधिकार है।

सिख धर्म में लंगर की प्रथा पहले पातशाह गुरु नानक देव जी ने आरम्भ की थी और उनके बाद के गुरु साहिबान ने इसे और अधिक परिपक्व किया था। लंगर के नियमों के अनुसार लंगर को बिना किसी ऊँच–नीच, अमीर–गरीब और राजा–किसान के भेदभाव के छकना होता है। इस तरह, लंगर की संस्था समानता के सिद्धान्त को प्रयोग में लाती है। तीसरे गुरु जी का हुक्म था कि कोई भी लंगर में पंगत में बैठकर भोजन छके बग़ैर उनके दर्शन के लिए नहीं आ सकता। भारत के बादशाह अकबर को भी गुरु जी के दर्शन करने से पहले साधारण लोगों के साथ पंगत में बैठकर लंगर छकना पड़ा था।

गुरबाणी का अंग्रेजी में अनुवाद करने से पहले हम अपनी सीमाओं को कबूल करते हैं, क्योंकि पवित्र गुरबाणी का कोई प्रामाणिक अनुवाद जिससे हमें सही राह मिल सके, किया हुआ नहीं मिलता। इसका कारण है कि हरेक अनुवाद, अनुवाद करने वाले की दोनों भाषाओं को समझने की सामर्थ्य के अनुसार होगा। उसकी धर्म के लिए श्रद्धा और साथ ही उससे उसका जुड़ाव भी उसकी रचना में प्रत्यक्ष दिखाई देगा। परिणाम होगा कि भिन्न–भिन्न प्रकार के अनुवाद होंगे और कोई प्रामाणिक अनुवाद नहीं मिलेगा। हमारे इस धर्म ग्रंथ में अनुवादक को कई प्रकार की कठिनाई पेश आती हैं। उदाहरण के लिए, "सिद्ध गोष्ठी"– गुरु नानक जी का सिद्धों के साथ वार्तालाप– में "नाम", "नाम जप" की प्रेरणा, "सहिज अनंद", और "ओंकार" के संकल्पों का अनुवाद करना बहुत ही कठिन है। अंग्रेजी का शब्द "नेम" "नाम" के बिलकुल बराबर का अर्थ नहीं देता। यह एक अत्यंत कठिन काम है क्योंकि अंग्रेजी बोलने वाले लोगों को "सच्चा नाम" जैसी किसी बात का पता नहीं है, ना ही वे "नाम जपण" के कार्य को पूरी तरह समझ सकते हैं। कोई शब्दावली भी नहीं जो इनका और गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित बहुत सारे अन्य अनुभवी विचारों का अनुवाद करने में सहायक हो सके।

इस पुस्तक को पढ़ते हुए यह याद रखना चाहिए कि किसी एक बोली से दूसरी बोली में न्यायपूर्वक अनुवाद करना बिलकुल असंभव है। अनुवाद करना एक निश्चित साइंस नहीं है और इस कारण गुरबाणी की शाब्दिक व्याख्या संभव नहीं। गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी का कोई पूर्ण और निश्चित अनुवाद नहीं हो सकता। हमने गुरबाणी का अंग्रेजी में अनुवाद करने का यत्न गुरु साहिब के नियुक्त किए गये आदेशों के सार–अंश को कायम रखते हुए किया है।

सारे हवाले गुरु ग्रंथ साहिब में दिए हुए हैं, सिवाय जहाँ दूसरी तरह से बताया गया है। मूल बाणियों का अनुवाद हमने अलग–अलग लेखकों के अनुवादों में से लिया है, जो हमें सबसे अधिक उचित लगा था और सिख मिशनरी सैंटर उन सभी लेखकों का आभारी है।

इस पुस्तक का मंतव्य गुरु साहिबान के नियुक्त किए सिख धर्म के सिद्धान्त का प्रचार करना है। सर्व–शक्तिमान अकाल पुरुख की महिमा की कोई सीमा नहीं, पर इस पुस्तक के कर्ताओं ने गुरु जी के इलाही सन्देश और अकाल पुरुख के आध्यात्मिक रहस्य की महिमा को थोड़े और सादे शब्दों में दर्शाने का यत्न किया है।

गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित बाणी का केंद्रीय विषय 'नाम' है। सिखों के इस धार्मिक ग्रंथ में 'नाम' की शक्ति का गुणगाण और स्तुति की हुई है। यह सारे दुःखों, क्लेशों की निवृत्ति करता है। गुरु ग्रंथ साहब में 'नाम' को अकाल पुरुख का दूसरा नाम बताया गया है। 'नाम' ही सारे जीवों और ब्रह्मांड का आधार है। अकाल पुरुख एक मानसिक कल्पना नहीं है। वह जीवनात्मक और आत्मिक दोनों रूपों का आधार है। कुछ भी इतना सम्पूर्ण नहीं हो सकता जो कि 'नाम' (अकाल पुरुख) से अलग या स्वतंत्र होकर रह सके या रह रहा हो, या होगा।

नई जूनों में पुनः जन्म लेना, अपने कर्मों की सजा और श्राप है। आत्मा पषु जूनों में से होती हुई अकथनीय कष्ट पाती है। मनुष्य जन्म एक ईश्वरीय देन है। मनुष्य अकाल पुरुख की रचना का सरताज है। मनुष्य के पास अपने अस्तित्व को अनुभव कर सकने की भी सामर्थ्य है। उसमें आध्यात्मिक प्रगति के सबसे ऊँचे शिखर पर पहुँचने की योग्यता है। मनुष्य देह, आत्मिक और सदाचारी प्रगति करने का एक अवसर है। मनुष्य के बिना कोई धर्म या दर्शन कायम नहीं रह सकता। सिख गुरु साहिबान ने मनुष्य जीवन की कुलीनता का यश गाया है। क्योंकि मनुष्य को अकाल पुरुख के बारे में ज्ञान है और केवल मानव शरीर के द्वारा ही नाम सुमिरन करके मुक्ति प्राप्त हो सकती है। मनुष्य समाधी से मुक्ति की राह नहीं पा सकता। यह केवल नाम सुमिरन के द्वारा ही प्राप्त होता है। जब गुरु साहिबान और भक्त अकाल पुरुख की महिमा का गायन करते हैं तो मनुष्य को सम्बोधित करते हैं। वह मनुष्य को आध्यात्मिक शोभा के सबसे ऊँचे शिखरों की ओर बढ़ने के लिए उत्साहित करते हैं। गुरु साहिबान की ओर से "नाम जपो" का आदेश मनुष्य को दिया गया है क्योंकि सबसे ऊँचा आध्यात्मिक लक्ष्य केवल मनुष्य की ही पहुँच में है। "नाम जपो" का मंतव्य आध्यात्मिक प्रगति है जो गुरसिख का आखिरी लक्ष्य है।

हे अकाल पुरुख जी, अगर कोई आप जी के समान होता तो मैं आप जी की शोभा उसके सम्मुख करता। (परन्तु ना कोई आप जी के समान है और न ही सम्बन्धी है)। मैं आप जी की स्तुति आप जी के लिए ही करुँगा। आप जी का नाम मुझ अंधे को दृष्टि प्रदान करता है :

"होर सरीकु होवै कोई तेरा तिसु आगै तुधु आखां।।
तुधु आगै तुधै सालाही मैं अंधे नाउ सुजाखा।।"

(श्लोक महल्ला 1, पृष्ठ 1242, गुरु ग्रंथ साहिब)

हम पूर्ण श्रद्धा और अपार नम्रता सहित अपने अकाल पुरुख के सम्मुख नमस्कार करते हैं।

मार्च 1990
सिख मिशनरी सैंटर